सामाजिक संस्था सम्पूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

आलेख

उधड़ी सिलाई कर-कर बुन गया मेरा जीवन

-डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका अध्यक्षा

कोरोना का कठिन काल आ गया, चारों तरफ जैसे मातम सा छा गया। हर तरफ सब कुछ जैसे बंद हो गया। माननीय प्रधानमंत्री जी ने सबको घरों में रहने की हिदायत दे दी। मीरा घरों में काम करके जैसे-तैसे अपना और अपने परिवार का गुजर बसर करती थी। घर में चार-चार बच्चे हैं। पति भी सब्जी की ठेली लगाता है। उसकी भी आमदनी समाप्त हो गयी। मीरा को लगा कि जीने की कोई आषा ही नजर ही नहीं आती। जिनके घरों में मैं काम करती थी, वो पैसे के साथ-साथ कुछ अच्छी बातें भी बता ही दिया करती थीं। किंतु अब तो कोई भी कुछ बताने वाला नहीं है। मीरा बहुत परेषान थी। वह एक छोटी सी खोली में शहरीकृत गांव में रहती थी। आस-पास भी बहुत ही गरीब परिवार रहते थे। तभी मीरा को पता चला कि पास में ही एक सामाजिक संस्था है, जो चुने हुए प्रतिनिधियों के सहयोग से ऐसे गरीब परिवारों की भोजन की व्यवस्था कर रही है। मीरा को तो जैसे राम मिल गया। वह प्रतिदिन सुबह और शाम भोजन के लिए जाने लगी। वहीं पर उसकी मुलाकात संस्था की दीदी से हो गयी। जब दीदी ने कोरोना के काल में कैसे रहना है, ऐसे विषयों को बताया तो मीरा बहुत प्रसन्न हो गई। क्योंकि उसे लगने लगा कि अब भी उसके पास ऐसा व्यक्ति है जो उसके और उसके परिवार के बारे में निःस्वार्थ भाव से बात करता है। महीने बीतते गए और कोरोना के जाने की कोई आषा दिखाई नहीं दे रही थी। मीरा सोच रही थी कि वह इस प्रकार से भोजन लेकर अपने परिवार का कितने दिन तक गुजर बसर चला पाएगी। मन में एक ही लगन और तड़प कि किसी तरह मैं कुछ कमाने लगूं। देष की सरकार, समाजसेवी और परोपकारी लोग बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। किंतु मुफ्त में मिली कोई चीज मीरा को अच्छी नहीं लगती थी। वह कमा कर की अपने बच्चों का भरण-पोषण करना चाहती थी। मीरा ने जब अपनी व्यथा दीदी को बताई तो दीदी ने तुरंत एक विकल्प मीरा को दिया। उन्होंने कहा कि आपको थोड़ी बहुत सिलाई करनी आती है। मीरा ने बताया कि वह सिलाई नहीं जानती है। उसने आज तक धागा और सुईं पकड़ी तक नहीं है। उसका दीदी पर विष्वास अटूट था।

उसने कहा कि दीदी यदि मुझे कुछ दिन ट्रेनिंग मिल जाए तो मैं जल्द ही सिलाई करना सीख लूंगी। दीदी भी समझ गईं कि मीरा में काम करने की असीम ललक है। वह किसी भी हालत में अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। दीदी ने तुरंत उसे सम्पूर्णा में किरण मैडम से परिचय करा दिया। किरण जी ने उसको अपने सिलाई स्कूल में शामिल कर लिया। चार बच्चों की मां होने के कारण वह एक निष्चित समय में तो स्कूल नहीं आ पाती थी किंतु उसकी इच्छा शक्ति देखकर किरण मैडम ने भी सभी नियमों को ताक पर रखकर मीरा को सिलाई की कक्षा देनी प्रारंभ कर दी। धीरे-धीरे मीरा सिलाई में निपुण होती गई। और इन दिनों संस्था में अलट्रेषन का काम भी प्रारंभ हो गया। मीरा अलट्रेषन का काम बड़ी तत्परता और सूझ-बूझ से करने लगी। दिन में दौ सौ से तीन सौ रूपए वह घर बैठकर ही कमाने लगी। अब तो मजा ही आ गया। वह सम्पूर्णा में आए पुराने कपड़ों से डस्टर, पौंछे, मेज पॉष भी बनाने लगी। सम्पूर्णा में आए मास्क के काम में तो जैसे मीरा की चल पड़ी। वह प्रत्येक मास्क की सिलाई 5 रूपए लेने लगी। और धीरे-धीरे उसका यह काम उसके जैसी अनेकों बहनों के लिए नजीर बन गया। कितनी बहनें उधड़े हुए कपड़ों को सिलवाने के लिए आने लगीं। धीरे-धीरे मीरा ऐसे कपड़ों की मास्टर बन गई। सच में ही उधड़ी सिलाई कर-कर बुन गया मीरा का जीवन।